कला कला के लिए

कला कला के लिए
जीवन को खूबसूरत बनाने के लिए
न हो
रोटी रोटी के लिए हो
खाने के लिए न हो

मजदूर मेहनत करने के लिए हो
सिर्फ मेहनत
पूंजीपति हों मेहनत की जमापूंजी के
मालिक बन जाने के लिए
यानी, जो हो जैसा हो वैसा ही रहे
कोई परिवर्तन न हो
मालिक हो
गुलाम हो
गुलाम बनाने के लिए युद्ध हो
युद्ध के लिए फौज हो
फौज के लिए फिर युद्ध हो

फिलहाल कला शुद्ध बनी रहे
और शुद्ध कला के
पावन प्रभामण्डल में
बनें रहें जल्लाद
आदमी को
फांसी पर चढ़ाने के लिए। ◆

❑ गोरख पाण्डेय
प्रस्तुति : प्रभात